# LIBERTY स्वतंत्रता

## अर्थ व प्रकृति (Meaning and Nature) -

मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास के लिए अधिकारों का अस्तित्व नितान्त आवश्यक होता है और व्यक्ति के विविध अधिकारों में स्वतन्त्रता का स्थान बहुत अधिक महत्वपूर्ण है।

बर्ट्रेण्ड रसेल कहते है कि स्वतन्त्रता की इच्छा व्यक्ति की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है और इसी के आधार पर सामाजिक जीवन का निर्माण सम्भव है। मनुष्य का सम्पूर्ण भौतिक, मानसिक एवं नैतिक विकास स्वतन्त्रता के वातावरण में ही सम्भव है।

सामान्यत: स्वतंत्रता का अर्थ गलत रूप में समझा जाता है, क्योंकि उसे प्रतिबंधों तथा सीमाओं के अभाव का समरूपी समझा जाता है। इसे व्यक्ति के 'जो चाहे सो करे' के अधिकार का पर्यायवाची समझा जाता है। हॉब्स ने इसे स्वच्छंदता की स्थिति कहा है जो परिकल्पित प्राकृतिक अवस्था में उपलब्ध होती है। पुन: स्वतन्त्र विचारक स्वतन्त्रता का अर्थ प्राचीन परम्पराओं एवं बन्धनों से मुक्त होने से लेते है, आध्यात्मिक संत स्वतंत्रता का अभिप्राय सांसारिक मोह-माया से मुक्ति होने से लेते है और परतन्त्र देश के निवासी स्वतन्त्रता को स्वराज्य का पर्यायवाची समझते है, किन्तु व्यवहार में प्रचलित स्वतन्त्रता के इन विविध अर्थो में कोई अर्थ पूर्ण नहीं है। सही भाव में स्वतन्त्रता का अर्थ है व्यक्ति का उस कार्य को करने का अधिकार जो करने योग्य है। सामाजिक जीवन मान्यताओं अथवा मर्यादाओं के पुंज से विनियमित होता है जो व्यक्ति के जीवन को सभ्य बनाते है। ये प्रतिबंध अच्छे व बुरे, उचित व अनुचित, नैतिक व अनैतिक, वैध व अवैध के बीच अन्तर की रेखा खींचते है। इस प्रकार स्वतंत्रता का अर्थ है शुद्ध, उचित, नैतिक एवं वैध मार्ग का अनुकरण करते हुए व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के सर्वोत्तम संभव विकास के लिए जो करता है उसे करने का अधिकार होना चाहिए।

Avinash

Scanned with CamScanner

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहते हुए मनुष्य असीमित स्वतंत्रता का उपयोग कर ही नहीं सकता। उसे सामाजिक नियमों की मर्यादा के अन्तर्गत रहना होता है। अतः राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत स्वतंत्रता की जिस रूप में कल्पना की जाती है, उस रूप में स्वतन्त्रता मानवीय प्रकृति और सामाजिक जीवन के इन दो विरोधी तत्वों (बन्धनों का अभाव और नियमों के पालन) में सामंजस्य का नाम है। अतः यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता व्यक्ति की अपनी इच्छानुसार कार्य करने की शक्ति का नाम है बशर्ते की इनसे दूसरे व्यक्ति की इसी प्रकार की स्वतन्त्रता में कोई बाधा न पहुंचे।

मैकेन्जी के अनुसार, स्वतंत्रता सभी प्रकार के प्रतिबन्धों का अभाव नहीं, अपितु अनुचित प्रतिबन्धों के स्थान पर उचित प्रतिबन्धों की व्यवस्था है।

टी. एच. ग्रीन के अनुसार, जिस प्रकार सौन्दर्य कुरूपता के अभाव का नाम ही नहीं होता, उसी प्रकार स्वतन्त्रता प्रतिबन्धों के अभाव का ही नाम नहीं है। ग्रीन स्वतन्त्रता के सकारात्मक रूप को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि स्वतन्त्रता ऐसे कार्य करने और उपयोग करने की शक्ति का नाम है जो करने योग्य या उपभोग के योग्य हो। लास्की के अनुसार, स्वतन्त्रता उस वातावरण को बनाए रखना है जिनमें व्यक्ति को अपने जीवन का सर्वोत्तम विकास करने की सुविधा प्राप्त हो। इस प्रकार सकारात्मक रूप में स्वतन्त्रता का तात्पर्य ऐसे वातावरण और परिस्थितियों की विद्यमानता से है जिससे व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास कर सके।

इस प्रकार स्वतन्त्रता के दो तत्व कहे जा सकते हैं।

(i) न्यूनतम प्रतिबंध – स्वतन्त्रता का प्रथम तत्व यह है कि व्यक्ति के जीवन पर शासन और समाज के दूसरे सदस्यों

Avinash

की ओर से न्यूनतम प्रतिबन्ध होने चाहिए जिससे व्यक्ति अपने विचार और कार्य व्यवहार में अधिकाधिक स्वतन्त्रता का उपयोग कर सके।

(ii) व्यक्तित्व के विकास हेतु सुविधाएं – स्वतन्त्रता का दूसरा तत्व यह है कि समाज और राज्य द्वारा व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व के विकास हेतु अधिकाधिक सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए।

अतः यह कहा जा सकता है कि स्वतन्त्रता जीवन की ऐसी अवस्था का नाम है जिसमें व्यक्ति के जीवन पर न्यूनतम प्रतिबन्ध हों और व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के विकास हेतु अधिकतम सुविधाएं प्राप्त हों।

- सीले के अनुसार, स्वतन्त्रता, अतिशासन का विलोम है।
- मैक्कीन के अनुसार, स्वतंत्रता सभी प्रतिबंधों का अभाव नहीं, बल्कि अतार्किक प्रतिबंधों का अभाव है।
- लियो स्ट्रॉस के अनुसार, मानव जीवन में ऐसा कोई संबंध नहीं है, जिसमें वह दूसरों से संबंधित न हो। अर्थात वह पूरी तरह से मुक्त हो। स्वतन्त्रता की व्यापक भावना स्वतन्त्रता पर प्रतिबंध की मांग करती है।
- स्वतन्त्रता का विचार आधुनिक युग की देन है।

Avinash

Scanned with CamScanner